The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 1 | January 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

वर्तमान समय में स्वामी विवेकानंद जी का धर्म पर विचारों की प्रासंगिकता

डॉ ओमप्रकाश कौशिक

अतिथि व्याख्याता,स्व, श्री देवी प्रसाद चौबे जी शासकीय महाविद्यालय गांड़ई
जिला (के. सी. जी) छत्तीसगढ़

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:

धर्म, मानवता, स्वामी विवेकानंद, आत्मा सहिष्णुता कर्मयोग, शिकागो धर्म महासभा

ABSTRACT

स्वामी विवेकानंद जी भारतीय धर्म, संस्कृति और अध्यात्म का एक आदर्श रूप प्रस्तुत करने वाले संत, आध्यात्मिक नेता और महान विचारक थे। उनके विचारों ने धर्म को मानवता, सहिष्णुता, और आत्मोउन्नति का मार्ग बताया। यह आलेख स्वामी विवेकानंद के धर्म व अध्यात्म संबंधी विचारों को विस्तार से समझाने का प्रयास करेगा। इसमें प्रस्तावना, धर्म का अर्थ, उनके प्रमुख विचार, निष्कर्ष और संदर्भ ग्रंथों का समावेश है। प्रस्तुत शोध पत्र द्वितियक तथ्यों पर आधारित हैं। इस शोध पत्र के माध्यम से हम उनके धर्म संबंधी विचारों को समझने का प्रयास करेंगे।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.14849436

प्रस्तावना

स्वामी विवेकानंद जी भारतीय संस्कृति, धर्म और अध्यात्म के महान प्रचारक थे। उन्होंने धर्म को मात्र आस्था तक सीमित न रखते हुए इसे विज्ञान, तर्क और अनुभव पर आधारित एक जीवन पद्धति के रूप में प्रस्तुत किया। उनका मानना था कि सच्चा धर्म वह है जो (मानवता) गरीब दीन दुखियों की सेवा करे और समाज में प्रेम, करुणा, और समरसता का विस्तार करे। उनके विचारों ने न केवल देश में, बल्कि पूरे दुनिया में धार्मिक सहिष्णुता, एकता और मानवतावाद को बढ़ावा दिया। स्वामी विवेकानंद का अवतरण 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ था। उनके बालपन का नाम नरेंद्रनाथ था। वे रामकृष्ण परमहंस के सच्चे व विश्वास पात्र

शिष्य थे और उन्होंने उनके आध्यात्मिक सिद्धांतों को आगे बढ़ाया। 1893 में शिकागो धर्म महासभा में उनका ऐतिहासिक भाषण आज भी धर्म और मानवता के अदभुत संदेश के लिए जाना जाता है। उनका मानना था कि धर्म केवल ईश्वर की आराधना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मनुष्य की आत्मा और समाज की उन्नति का साधन है।

स्वामी विवेकानंद के विचारों की प्राकसंगिकता

1 स्वामी विवेकानंद के अनुसार, धर्म केवल पूजा-पद्धति या रूढ़ियों का पालन नहीं है, बल्कि यह आत्मा की खोज, मानवता की सेवा और जीवन के सत्य की प्राप्ति का मार्ग है। उन्होंने भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म के गहरे अर्थ को समझाया और धर्म को एक व्यापक और व्यावहारिक दृष्टिकोण से देखा। उनके धर्म संबंधी प्रमुख विचार इस प्रकार हैं: स्वामी विवेकानंद के अनुसार, धर्म का मूल उद्देश्य आत्मा का विकास और सत्य की खोज है। उन्होंने कहा था–"धर्म का अर्थ है अपने भीतर ईश्वर को खोजना। जब तक हम अपने भीतर दिव्यता को नहीं पहचानते, तब तक हम सच्चे धार्मिक नहीं हो सकते।" वे धर्म को केवल पूजा-पद्धति तक सीमित नहीं मानते थे, बल्कि इसे मानव सेवा और परोपकार से जोड़ते थे। "जिस धर्म में मानवता की सेवा नहीं है, वह कोई धर्म नहीं है। भगवान उन गरीबों, बीमारों और असहायों की सेवा में हैं, जिन्हें हम मंदिरों और मस्जिदों में खोजते हैं।" स्वामी विवेकानंद का मानना था कि सभी धर्म एक ही सत्य की ओर ले जाते हैं।

2 **स्वामी विवेकानंद के व्यावहारिक धर्म** – स्वामी जी का धर्म केवल पूजा-पाठ या रस्मों तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने "व्यावहारिक धर्म" (Practical Religion) पर बल दिया। उनके अनुसार, धर्म का उद्देश्य केवल ईश्वर की आराधना करना नहीं, बल्कि मानवता की सेवा करना, आत्मशक्ति को पहचानना और समाज के कल्याण के लिए कार्य– मानवता की सेवा, आत्मबल का विकास, और समाज कल्याण। उन्होंने कहा, "जिस धर्म से गरीबों का उद्धार न हो, जो भूखों को रोटी न दे सके, वह धर्म नहीं बल्कि अधर्म है।"व्यावहारिक धर्म का अर्थ है कि व्यक्ति को केवल ग्रंथों को पढ़ने या मंदिरों में जाने तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि अपने आचरण और कार्यों से धर्म को जीना चाहिए। वे कहते थे, "दरिद्र नारायण की सेवा ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।" उन्होंने धार्मिक कर्मकांड की जगह गरीबों, अज्ञानी और शोषितों की सेवा को प्राथमिकता दी। उनके अनुसार, भूखे को

भोजन कराना, अशिक्षित को शिक्षा देना और निर्बलों को बल देना ही धर्म है। उन्होंने कहा, "पहले खुद पर विश्वास करो, फिर भगवान पर।" व्यक्ति को अपनी आंतरिक शक्ति को पहचानकर आगे बढ़ना चाहिए। आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान के बिना कोई भी धर्म सफल नहीं हो सकता।

3 **धर्मों की समानता एवं सहिष्णुता**– स्वामी जी मानते थे कि सभी धर्म समान हैं और हर धर्म का उद्देश्य प्रेम और सेवा है। उन्होंने कहा, "सच्चा धर्म वह है जो हमें जोड़ता है, न कि तोड़ता है। उन्होंने जाति, पंथ, भाषा और धार्मिक भेदभाव को नकारते हुए समरसता की बात की। वे मानते थे कि धर्म मानवता को जोड़ने का माध्यम है, न कि विभाजन का। "सभी धर्म एक ही सत्य की ओर ले जाते हैं, बस उनके मार्ग अलग-अलग हैं।" वे धार्मिक कट्टरता और भेदभाव के घोर विरोधी थे।

4. **कर्मयोग और धर्म**– स्वामी जी ने कर्म योग और धर्म पर गहन विचार प्रस्तुत किए, जिनका मुख्य उद्देश्य समाज के उत्थान और आत्मविकास को प्रोत्साहित करना था। वे वेदांत और गीता के सिद्धांतों को व्यवहारिक रूप से जीवन में उतारने पर जोर देते थे। स्वामी विवेकानंद ने कर्म योग को निःस्वार्थ कर्म और मानवता की सेवा से जोड़ा। उनके अनुसार निःस्वार्थ कर्म ही सच्चा योग है वे कहते थे, "निष्काम कर्मयोग का अर्थ है बिना किसी स्वार्थ के कार्य करना। कर्म ही पूजा है, और सेवा ही भगवान की सच्ची आराधना है।" व्यक्ति को फल की चिंता किए बिना कर्म करना चाहिए, क्योंकि कर्म ही व्यक्ति के भाग्य का निर्माण करता है। "जो दूसरों की सेवा करता है, वह वास्तव में ईश्वर की सेवा करता है।" उन्होंने सेवा कार्यों को सर्वोच्च धर्म बताया और रामकृष्ण मिशन की स्थापना इसी उद्देश्य से की। आत्मनिर्भरता और कर्मयोग के माध्यम से आत्मनिर्भरता और राष्ट्रनिर्माण पर जोर देते थे। उनका मूल मंत्र है, "उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।" अपने कर्तव्यों का निष्ठा से पालन करने वाला व्यक्ति ही सच्चा कर्मयोगी होता।

5 **शिक्षा व आध्यात्मिकता का समन्वय**– अध्यात्म शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आत्मनिर्भर, चरित्रवान और जागरूक व्यक्ति बनाना है। उन्होंने कहा, "शिक्षा का अर्थ केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि आत्मा की पूर्णता को जाग्रत करना है।" गुणवत्ता और व्यावहारिक शिक्षा - उन्होंने पुस्तकिय ज्ञान के बजाय व्यावहारिक और नैतिक शिक्षा पर बल दिया। उनके अनुसार, "ऐसी शिक्षा ग्रहण करें जिससे चरित्र निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढ़े और आत्मनिर्भरता आए।" शिक्षा का उद्देश्य मानवता की सेवा - उन्होंने कहा कि "अगर गरीबों और असहायों की

मदद करने में आपकी शिक्षा उपयोगी नहीं है, तो वह शिक्षा व्यर्थ है।" उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी प्राप्त करना नहीं, बल्कि जीवन के उच्च उद्देश्यों की प्राप्ति करना भी होना चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य आत्मा की पहचान और नैतिकता का विकास होना चाहिए। उन्होंने कहा, "सच्ची शिक्षा वही है जो आत्मा को जागृत करे और समाज के प्रति दायित्व का एहसास कराए ।"

6. **धर्म और विज्ञान का सामंजस्य**– स्वामी जी ने धर्म और विज्ञान के बीच समन्वय स्थापित करने पर विशेष बल दिया। उनके विचारों में यह स्पष्ट झलकता है कि धर्म और विज्ञान परस्पर विरोधी नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं। उनके अनुसार, सच्चा धर्म वही है जो तर्क और अनुभव पर आधारित हो, और विज्ञान वही श्रेष्ठ है जो मानवता को आध्यात्मिकता के निकट ले जाए। जैसे विज्ञान प्रयोग और तर्क पर आधारित होता है, वैसे ही धर्म भी अनुभूति और अनुभव पर आधारित होना चाहिए। धर्म केवल आस्था पर आधारित न हो, बल्कि तर्क और विश्लेषण द्वारा प्रमाणित हो। उन्होंने कहा कि यदि धर्म अंधविश्वास पर आधारित होगा, तो वह मानवता के लिए उपयोगी नहीं रहेगा। इसके बजाय, धर्म को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सत्यापन योग्य बनाना होगा। स्वामी जी वेदांत को उच्चतम विज्ञान मानते थे। वे कहते थे कि वेदांत केवल एक धार्मिक दर्शन नहीं, बल्कि जीवन और ब्रह्मांड को समझने की वैज्ञानिक विधि भी है। उन्होंने धर्म को केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे व्यावहारिक रूप से जीवन में लागू करने की बात कही। वे कहते थे कि जैसे विज्ञान प्रयोगशालाओं में परीक्षण द्वारा सिद्ध होता है, वैसे ही धर्म को भी आत्म-अनुभव के द्वारा प्रमाणित करना चाहिए। जिस प्रकार विज्ञान पदार्थ (matter) का अध्ययन करता है, उसी प्रकार धर्म आत्मा (soul) का अध्ययन करता है। दोनों का उद्देश्य सत्य की खोज करना है। भविष्य का विज्ञान और धर्म - वे मानते थे कि आने वाले समय में विज्ञान और धर्म का समन्वय होगा, जिससे एक नई सभ्यता का निर्माण होगा, जिसमें तर्क और आध्यात्मिकता का संतुलन होगा, धर्म और विज्ञान को एक-दूसरे का पूरक माना। उनके अनुसार, "धर्म का विज्ञान से विरोध नहीं है, बल्कि यह उसके साथ मिलकर मानवता का उत्थान करता है।" वे आधुनिक विज्ञान के माध्यम से धार्मिक सत्यों को समझने पर जोर देते थे।

7. **धर्म और मानवता**– स्वामी जी ने सिखाया कि सच्ची भक्ति और मानवता की सेवा एक-दूसरे से अलग नहीं हैं। उनके अनुसार, गरीब और पीड़ित लोगों की सेवा ही ईश्वर की सच्ची आराधना है। "शोषित, वंचित, दरिद्र,

और दलित लोग ही साक्षात् नारायण हैं, उनकी सेवा करना ही सच्चे ईश्वर की सेवा है।" समाज में व्याप्त गरीबी, अशिक्षा और असमानता को दूर करने का एक मार्ग यह सेवा भाव है। जब कोई निस्वार्थ भाव से सेवा करता है, तो उसका आत्मिक विकास होता है और अहंकार नष्ट होता है यदि समाज के हर वर्ग को शिक्षा, भोजन और बुनियादी सुविधाएँ मिलेंगी, तो देश प्रगति करेगा। स्वामी विवेकानंद ने मानवता को धर्म का मूल आधार बताया। उन्होंने कहा, "यदि धर्म मनुष्य को मानवता सिखाने में असफल है, तो वह धर्म नहीं है।" उनका मानना था कि सच्चा धर्म वही है जो दूसरों की सेवा और समाज के कल्याण के लिए प्रेरित करे।

8. **विश्व धर्म महासभा**–उल्लेखनीय है कि 11 सितंबर 1893 को अमेरिका के शिकागो में आयोजित विश्व धर्म महासभा (Parliament of the World's Religions) में अपने ऐतिहासिक भाषण से पूरी दुनिया को भारतीय आध्यात्मिकता और वेदांत के महान सिद्धांतों से परिचित कराया। उनका संबोधन न केवल भारतीय संस्कृति की गहराई को दर्शाया अपितु पूरी मानव जाति को एकता और प्रेम का संदेश दिया।

शिकागो भाषण की प्रमुख बातें भाइयों और बहनों का संबोधन - विवेकानंद जी ने "Sisters and Brothers of America" कहकर जैसे ही भाषण की शुरुआत की, वैसे ही पूरा सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। इससे उनके प्रेम, करुणा और वैश्विक भाईचारे का संदेश तुरंत सभी के हृदय तक पहुंच गया।

9. **सर्व धर्म समभाव** - स्वामी जी मानते थे कि सत्य तक पहुँचने के अलग-अलग मार्ग हो सकते हैं, लेकिन सभी धर्मों का अंतिम उद्देश्य आत्मा की मुक्ति और परम सत्य की प्राप्ति है। वे यह मानते थे कि हमें न केवल अपने धर्म का पालन करना चाहिए, बल्कि अन्य धर्मों का भी समान रूप से सम्मान करना चाहिए। उन्होंने कट्टरता और धार्मिक भेदभाव का विरोध किया और सभी को एकता के सूत्र में पिरोने की बात कही , स्वामी विवेकानंद ने यह भी कहा कि विभिन्न धर्म विभिन्न रास्ते हो सकते हैं, लेकिन सभी का लक्ष्य एक ही है - आध्यात्मिक उन्नति। केवल बाहरी रीति-रिवाजों से धर्म का पालन नहीं होता, बल्कि सच्चे मन और प्रेम से भगवान की आराधना करना ही सबसे महत्वपूर्ण है। स्वामी विवेकानंद ने 1893 में शिकागो के विश्व धर्म संसद में कहा था: "मैं उस धर्म का अनुयायी हूं, जिसने दुनिया को प्रेम, दया, करुणा और सार्वभौमिक स्वीकार्यता का पाठ पढ़ाया है।" स्वामी जी के विचारों के अनुसार, धर्म किसी व्यक्ति या समाज को विलग करने का नहीं, बल्कि आपस में मिलने का माध्यम होना चाहिए।

10 **जितने मत, उतने पंथ** - इस विचार का अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति की अपनी सोच, समझ विश्वास तथा आस्था होती है, इसी आधार पर वे अपने पंथ (मार्ग) का निर्धारण करते हैं। विवेकानंद जी का यह कथन धार्मिक सहिष्णुता और विविधता को स्वीकार करने का संदेश देता है। उनका मानना था कि हर व्यक्ति अपने अनुभव और तर्क के अनुसार सत्य की खोज करता है, इसलिए अलग-अलग मत और विचारधाराएँ होना स्वाभाविक है। वे यह भी कहते थे कि सभी मतों और पंथों का उद्देश्य एक ही है–सत्य की प्राप्ति। इसलिए हमें सभी विचारों और मार्गों का सम्मान करना चाहिए और अपने मत को ही सर्वोत्तम मानकर दूसरों की आलोचना नहीं करनी चाहिए। यह विचार भारत की धार्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक विविधता को समझने और सम्मान देने की प्रेरणा देता है।

11 **राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता** - उन्होंने भारतीय समाज में आत्मसम्मान, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और राष्ट्र प्रेम को जाग्रत करने का कार्य किया। उनके राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता को लेकर प्रमुख विचार इस प्रकार हैं: स्वामी जी मानते थे कि भारत एक महान आध्यात्मिक धरोहर का केंद्र है, और हमें अपने गौरवशाली अतीत को समझते हुए राष्ट्र की उन्नति करनी चाहिए। उनके अनुसार – "हमारे पास जो भी है, हमें अपने पैरों पर खड़े होकर उसे विकसित करना चाहिए और भारत को एक महान राष्ट्र बनाना चाहिए स्वामी विवेकानंद के अनुसार, स्वतंत्रता केवल राजनीतिक नहीं बल्कि मानसिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से भी होनी चाहिए। वे मानते थे कि यदि लोग आत्मनिर्भर बनेंगे तो भारत स्वतः ही स्वतंत्र और शक्तिशाली बन जाएगा। स्वामी विवेकानंद युवाओं को राष्ट्र निर्माण की सबसे बड़ी शक्ति मानते थे। उन्होंने कहा था–"मुझे बस 100 ऊर्जावान, निस्वार्थ और देशभक्त युवा मिल जाएं, और मैं भारत को एक महान राष्ट्र में बदल दूंगा ।" वे युवाओं को आत्मनिर्भर बनने, शिक्षा ग्रहण करने और समाज के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित करते थे। वे राष्ट्रवाद को आध्यात्मिकता से जोड़कर देखते थे। उनका मानना था कि भारत की आत्मा उसकी संस्कृति और आध्यात्मिकता में बसती है। उन्होंने कहा– "जिस दिन तुम्हें यह विश्वास हो जाएगा कि ईश्वर तुम्हारे भीतर है, उसी दिन से तुम अजेय हो जाओगे और भारत पुनः विश्वगुरु बन जाए स्वामी विवेकानंद ने भारतीय संस्कृति को संपूर्ण मानवता के लिए कल्याणकारी बताया और कहा कि जब तक हम अपनी संस्कृति और मूल्यों पर गर्व नहीं करेंगे, तब तक हम एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण नहीं कर सकत स्वामी विवेकानंद का राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था,

बल्कि वे एक आत्मनिर्भर, शिक्षित, और सांस्कृतिक रूप से सशक्त भारत की कल्पना करते थे। उनके विचार आज भी युवाओं और राष्ट्र के विकास के लिए प्रेरणा स्रोत बने हुए है

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद का धर्म पर दृष्टिकोण मानवता, सहिष्णुता और आत्मा की उन्नति का प्रतीक है। उन्होंने धर्म को पूजा-पाठ से ऊपर उठाकर मानव सेवा और आत्मा की दिव्यता के रूप में स्थापित किया। उनके विचार आज भी हमें प्रेरणा देते हैं कि धर्म केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक उत्थान का भी माध्यम है। उनके सिद्धांत न केवल धार्मिक विचारकों के लिए, बल्कि हर व्यक्ति के लिए मार्गदर्शक हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. "योग: विवेकानंद की दृष्टि" - स्वामी विवेकानंद
2. "शिकागो धर्म महासभा भाषण"
3. "विवेकानंद साहित्य संग्रह"
4. "रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद" - राधाकृष्णन
5. "विवेकानंद के प्रेरक विचार"
6. कमप्लीट वर्क ऑफ स्वामी विवेकानन्द, वॉल्यूम 6, पृ0 382.
7. योगेश कुमार शर्मा, भारतीय राजनीतिक चिन्तक, कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2001, पृ0 23.
8. अमरेश्वर अवस्थी एवं रामकुमार अवस्थी, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, रिसर्च पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2004, पृ0 123.
9. एस. एल. नागोरी, प्राचीन भारतीय चिंतन, नेषनल पब्लिष्लिंग हाऊस, जयपुर, पृ0 272.
10. बी. एल. ग्रोवर, आधुनिक भारत का इतिहास, एस. चन्द एण्ड कम्पनी, पृ0 276
11. विपिन चन्द्र एवं मृदुला मुखर्जी, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेषालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1990, पृ0 47
12. सुमित सरकार, आधुनिक भारत (1885-1947), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993, पृ0 91.

13.विपिन चन्द्र, आधुनिक भारत के नेतृत्व में सम्पादन मण्डल, 1971, पृ0 153.

14.प्रताप सिंह, आधुनिक भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, रिसर्च पब्लिष्लिंग